चीनी नववर्ष २०१९ : शूकर-वर्ष [वराह-वर्ष]

जून्गन् और ओश्कि

चीनी नववर्ष २०१९ के सम्मान में एक कहानी

चीनी राशि चक्र, बारह वर्षीय चक्र पर आधारित है, जिसमें हर एक वर्ष एक विशिष्ट पशु से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि वह विशिष्ट वर्ष और उस वर्ष में जन्म लेने वाले लोग, दोनों ही उस वर्ष के पशु के गुणों को दर्शाते हैं।

इस वर्ष, चन्द्रतिथि के अनुसार चीनी नववर्ष, मंगलवार, ५ फ़रवरी को है। यह दिन शूकर यानी सूअर के वर्ष [वराह-वर्ष] के आरम्भ का सूचक है जो बारह वर्षीय चक्र का बारहवाँ वर्ष है। शूकर-वर्ष में जन्म लेने वाले लोग उदार, स्नेही, विश्वसनीय और निष्ठावान होते हैं।

***

बहुत समय पहले की बात है, उत्तरी अमरीका की एक विशाल झील के किनारे दो नन्हें सूअर भोजन की तलाश कर रहे थे। ये दोनों सूअर भाई थे और अभी छोटे-छोटे बच्चे ही थे। हालाँकि वे काफ़ी दुबले-पतले थे परन्तु फिर भी बहुत ही प्यारे थे।

भूखे होने के बावजूद वे ख़ुशी से उछल-कूद करते हुए खेल रहे थे। वे मिट्टी में लोटते, अपनी गुलाबी सिकुड़ी हुई नाक से एक-दूसरे को सूँघते और धक्का देते, और अपने आस-पास घास के गुच्छों को बड़े कौतूहल से देखते। सोचते कि इनमें से *कुछ* पौधे तो जरूर ही खाने में स्वादिष्ट होंगे।

जैसे ही उन्हें अच्छी घास दिखी जो लग रही थी कि स्वादिष्ट होगी कि तभी कहीं से एक अजीब-सी आवाज़ सुनाई दी। पर पता नहीं कहाँ से आ रही थी। *धम। धम। धम।* सूअर रुककर आस-पास देखने लगे। यह क्या हो सकता है?

धम। धम। धम। वही आवाज़ फिर से सुनाई दी, ऐसा लग रहा था कि वह और तेज़ होती जा रही थी। दोनों सूअर भागकर घास के पीछे दुबक गए, जितना नीचे होकर छिप सकते थे, छिप गए। उनकी आँखें चौड़ी हो गईं, आश्चर्य-चकित होकर एक-दूसरे को ताकने लगे।

और फिर — कुछ नहीं। मौन।

बड़े सूअर ने बहुत ही सावधानी से एक क़दम आगे बढ़ाया। उसने अपनी नाक, घास से थोड़ी-सी बाहर निकाली ही थी कि अचानक — *साएँ!* लकड़ी की एक बड़ी-सी छड़ी घूमती हुई उसकी ओर आई। वह चीखा और पीछे होते-होते अपने भाई के ऊपर गिर पड़ा।

दोनों अभी उठने की कोशिश ही कर रहे थे कि तभी उन्होंने बड़ी-बड़ी चमकती आँखों को देखा जो ऊपर से उन्हीं की ओर देख रही थीं। शीघ्र ही एक बूढ़ी महिला का चेहरा साफ़ दिखाई देने लगा — उसके चेहरे पर बढ़ती उम्र के कारण जितनी झुर्रियाँ थीं, उतनी ही दयालुता भी थी। उसके हाथ में एक काले रंग की टोकरी थी जो ऊपर तक चीढ़ के पत्तों से भरी हुई थी।

“अरे, सुनो!” महिला ने अपनी सहारे की उस छड़ी को पीछे की ओर लेते हुए कहा। “कौन हो तुम लोग? तुम छोटे-छोटे बच्चे, क्या यहाँ बिल्कुल अकेले हो?”

सूअर के बच्चों ने पलकें झपकाते हुए उसकी ओर देखा। बूढ़ी औरत ने आस-पास नज़र दौड़ाई परन्तु उसे उन बच्चों की माँ कहीं नज़र नहीं आई।

“तो फिर आओ — मेरी टोकरी में आ जाओ। ऐसा लगता है कि तुम दोनों भूखे हो। चलो, मैं तुम्हें अपने घर ले चलती हूँ, पास ही के गाँव शॉबिटाउन में है और जितनी अच्छी तरह हो सकेगा, मैं तुम्हारी देखभाल करूँगी।”

उसकी आवाज़ मृदुल थी, सुखदायक थी। सूअर उसकी ओर उत्सुकता से बढ़े। उन दोनों के कान के पीछे थपकाते हुए बूढ़ी औरत ने फिर कहा, "आ जाओ।" उसने सूअर के दोनों बच्चों को उठाया और एकत्र किए हुए चीढ़ के पत्तों पर बिठा दिया। फिर वे सब चल पड़े शॉबिटाउन की ओर।

चलते-चलते वह महिला टोकरी को पालने की तरह अपने हाथों में झुलाती हुई जा रही थी। कई वर्षों से वह अकेली रह रही थी। यद्यपि वह अपने एकाकी जीवन की आदी हो गई थी, परन्तु अन्दर से वह खुश नहीं थी। वह किसी साथ के लिए व्याकुल थी। सूअर के उन दो नन्हें बच्चों को देखकर उसे अपने हृदय में कुछ उमड़ता हुआ महसूस हुआ, लम्बे समय से उसके अस्तित्व के निष्क्रिय और सूखे पड़े किनारों में उमड़ता स्नेह और प्रेम। बस, अब वह यही चाहती थी कि उन बच्चों के लिए अच्छा, गरम-गरम भोजन बनाए।

उस झोपड़ी में पहुँचकर — जहाँ वह रहती थी — उसने बिल्कुल ऐसा ही किया। उसने उन्हें मकई का दलिया बना कर दिया और देखने लगी कि कैसे वे बच्चे उसे जल्दी-जल्दी चाटते हुए खा रहे थे। उन बच्चों की ख़ुशी से भरी आवाज़ों से घर गूँज रहा था। जब उन्होंने भरपेट खाना खा लिया तब उसने उनके लिए फूस का एक बिस्तर तैयार किया और उस पर उन्हें लोरी गाकर सुला दिया।

अगले दिन भोर के समय, बूढ़ी महिला अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठ गई और उन सूअरों को खेलते हुए आस-पास के खेतों की छान-बीन करते हुए देखने लगी। सूरज की धुंधली किरणें घास पर खेल रही थीं और सूअर धूप सेंकते हुए उसका आनन्द उठा रहे थे। वह महिला थोड़ी देर तक उन्हें देखती रही, उसके चेहरे पर एक मन्द-सी मुस्कान छायी हुई थी। और तभी अचानक उसे ध्यान आया कि उसने अभी तक इन बच्चों का कोई नाम तो रखा ही नहीं था!

बहुत-से नामों के बारे में सोच-विचार करने के बाद वह एक निर्णय पर पहुँची। इनका नाम होगा ज़ून्गन् और ओश्कि।

***

बूढ़ी महिला की देख-रेख में सूअर जल्द-ही बड़े हो गए। वे बलशाली और तन्दुरुस्त हो गए थे और उनका स्वभाव हमेशा की तरह प्यारा ही रहा। ज़ून्गन् के बारे में सचमुच कुछ ख़ास था। कभी-कभी बूढ़ी महिला को यह महसूस होता कि वह जितना ज़ाहिर होने देता है, उससे कहीं अधिक समझदार है।

जब ज़ून्गन् और ओश्कि उस बूढ़ी महिला के साथ रहने आए थे, उसके लगभग छः महीने बाद, एक दिन उस गाँव में एक बहुत बड़ी दावत थी। दावत में इतना शोर-शराबा था कि उसमें जाना महिला ने उचित नहीं समझा। परन्तु गाँव के लोग उससे मिलने, उसका अभिवादन करने और उसे थोड़ा भोजन देने ज़रूर आए।

इसलिए जब भरी दोपहर में तीन हट्टे-कट्टे आदमी उसके दरवाज़े पर आए तो उसने ज़्यादा सोच-विचार नहीं किया।

उनमें से एक आदमी आगे आया। “नोकोमिस् — दादी माँ — हम यहाँ से गुज़र रहे थे तो हम खुद को आपके सूअरों को देखने से रोक नहीं पाए। वे कितने तन्दुरुस्त दिख रहे हैं! कितने खुश! क्या आपने इनकी परवरिश खुद की है?”

बूढ़ी महिला खुशी से फूली न समाई।

“ऐसा कहना आपका बड़प्पन है।” उसने कहा। “हाँ, क्यों, इन्हें मैंने ही पाला है, जब ये नन्हें-नन्हें बच्चे थे, तभी से। वहाँ वह बड़ा वाला — ” और उसने ज़ून्गन्की ओर इशारा किया जो झोंपड़ी से दूर खड़ा था और बड़ी सावधानी से देख रहा था — “वह ज़ून्गन् है। और वह उसका छोटा भाई ओश्कि, वहाँ, जो आपको अभी खेत से आता दिखाई दे रहा है।”

“बहुत अच्छे, आपने उन्हें बहुत अच्छे से पाला-पोसा है। हमने इतने अच्छे सूअर कभी नहीं देखे।” उस आदमी ने अपने साथियों की ओर देखा जिन्होंने ज़ोर-से, हाँ में अपना सिर हिलाया। “अब ये पूरी तरह वयस्क हो चुके होंगे, है न?”

“हाँ-हाँ,” बूढ़ी महिला ने जवाब दिया। “परन्तु जब ये मुझे पहली बार मिले थे, तुम्हें तब देखना चाहिए था इन्हें। बिल्कुल दुबले-पतले, छोटे-छोटे थे! लेकिन इन्हें हृष्ट-पुष्ट बनाने में मैं सफल रही हूँ। हाँ, मैं कहूँगी कि अब ये बिल्कुल स्वस्थ हैं।”

“निशीन् — अच्छा, अच्छा,” उस आदमी ने अन्मने ढंग से कहा। उसकी आँखें ज़ून्गन् पर टिकी हुई थीं।

वह आदमी महिला की ओर वापस मुड़ा। “नोकोमिस्, क्या आप हमारे साथ तम्बाकू नहीं खाएँगी? आज जश्न का दिन है, और हमारे लिए यह बड़े गर्व की बात होगी यदि आप थोड़ा लेंगी।”

महिला ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। तम्बाकू खिलाना उनके गाँव का एक पवित्र रिवाज़ था। और, ये आदमी भी बहुत सज्जन लग रहे थे। उसने अपने अतिथियों को अपनी झोपड़ी में आमन्त्रित किया और बैठने के लिए कहा।

कुछ देर बाद, उनमें से एक आदमी ने कहा, “नोकोमिस्, आपके पास ये जो दो सूअर हैं, वे सचमुच बहुत प्यारे हैं।”

महिला ने उस आदमी की ओर पलट कर देखा। किसी कारण से, वह उसके चेहरे का भाव समझ नहीं पा रही थी — उसकी आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा। अचानक उसके विचार धुंधले होने लगे और मन की प्रतिक्रिया सुस्त हो गई। अगर वो उस समय परिस्थिति को अच्छे से समझ पाती तो यह जान जाती कि जो तम्बाकू उन्होंने उसे दिया था उसमें कुछ गड़बड़ थी, उसमें कोई नशीला पदार्थ मिला हुआ था और वस्तुतः इन आदमियों का इरादा कुछ ठीक नहीं था।

परन्तु ऐसा कुछ भी सोच-विचार करने के लिए उसकी सोचने की शक्ति क्षीण हो गई थी।

“हूँ. . .” वह बस इतना ही कह पाई।

“आपके सूअर, नोकोमिस्।”

इस समय तक तो बूढ़ी महिला की आँखें बन्द हो चुकी थीं। वह अपने आप में ही हँस रही थी। अन्ततः, उसने मुँह खोला जैसे कि वह कुछ कहना चाहती हो, पर वह बेसुरी आवाज़ में कुछ गाने लगी। “ठीक है, ठीक है, सब कुछ ठीक है. . . ” वह शून्यचित्त अवस्था में गाती रही।

आदमी ने देखा कि मौका सही है। “नोकोमिस्, क्या आप हमें अपना एक सूअर बेचेंगी?”

बूढ़ी महिला बस गाती ही रही। “ठीक है, ठीक है, सब कितना ठीक है. . . ”

“वह छोटा वाला?” आदमी ने पूछा। वह और अधिक जोखिम नहीं उठाना चाहता था, कहीं ऐसा न हो कि बूढ़ी महिला होश में आ जाए।

“ठीक है, ठीक है, सब कुछ बिल्कुल ठीक है. . . ”

“बहुत अच्छा। तो फिर आप जाकर उसे ले आएँगी?” उस आदमी ने पूछा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

अभी भी अपनी ही धुन में मग्न उस महिला ने आदमी का हाथ पकड़ा और लड़खड़ाते हुए चलने लगी। वह आदमी उसे झोंपडी के दरवाज़े तक ले गया, जहाँ वह अपनी मधुर आवाज़ में पुकारने लगी, “ओश्कि! ओश्कि! इधर आओ!”

अब, कुछ देर से वे सूअर झोंपड़ी के पास ही घास में छिपे हुए थे। उन्होंने इन आदमियों और उस बूढ़ी महिला के बीच की पूरी बात सुन ली थी। हर शब्द के साथ उनकी आँखें चौड़ी होती जा रही थीं। जब इस बूढ़ी महिला ने ओश्कि का नाम पुकारा तो वह अपने भाई की ओर देखने लगा। वह डरा हुआ था।

“भाई, ये लोग जो यहाँ आए हैं, वे बहुत अजीब लग रहे हैं। मैं नहीं चाहता कि ये लोग मुझे ले जाएँ। मुझे इसमें किसी खतरे का आभास हो रहा है।” ओश्कि का मुँह भय से काँपने लगा।

ज़ूनान् ने बड़े प्यार से अपने सिर से अपने भाई के सिर को सहलाया और कोमलता से कहा :

“मुझे क्षमा करना ओश्कि। मैं चाहकर भी तुम्हारा भाग्य नहीं बदल सकता। परन्तु, मैं इतना ज़रूर कह सकता हूँ : तुम जहाँ कहीं भी जाओ, तुम्हारे साथ जो कुछ भी हो, जल के सरोवर में स्नान करना स्मरण रखना। उस सरोवर में स्नान करो। इससे तुम एक ऐसी सुगन्ध को पा लोगे जो देवदार के इत्र की भाँति सुगन्धित है, ऐसी सुगन्ध जो कभी फ़ीकी नहीं पड़ती।”

जब ज़ूनगन् ने यह कहा तब बूढ़ी महिला झोंपड़ी के दरवाज़े पर ही खड़ी थी। नशे का असर कम होने लगा था। जब उसने अपने सूअर के शब्द सुने, तो वे उसके हृदय को भेद गए।

वह अपनी झोंपड़ी में खड़े उन लोगों की ओर मुड़ी, उसकी आँखें आँसुओं के कारण चमक रही थीं। वे लोग उसकी ओर देखने लगे, उनकी भौहें तनी थीं और उनके चेहरे बुरी तरह से शिथिल पड़ चुके थे। उन्होंने भी ज़ूनगन् के शब्द सुने थे। एक सूअर, पहेलियों और विरोधाभासी ढंग में बात कर रहा है! इससे क्या समझा जाए?

“चले जाओ यहाँ से,” बूढ़ी महिला ने कड़े शब्दों में कहा। “मेरे सूअर तुम्हारे या किसी और के खरीदने के लिए नहीं हैं।”

आदमियों ने विरोध नहीं किया। बड़े अस्पष्ट स्वर में उन्होंने क्षमा माँगी और फिर बड़बड़ाए कि वैसे भी उन्हें दिन में और भी कई काम हैं। ऐसा कहकर वे वहाँ से जाने लगे, पर जाते-जाते भी वे बूढ़ी महिला और उसके सूअरों को आश्चर्य से देखते रहे।

यह ख़बर गाँव में तेज़ी से फैल गई और जल्द-ही गाँव के मुखिया को इस बारे में पता चला कि क्या हुआ था। उत्सुकतापूर्वक, उसने बूढ़ी महिला और उसके सूअरों को अपनी झोंपड़ी पर बुलाया जहाँ वह अपने परिवार के साथ रहता था।

बड़े सम्मान और आदर के साथ मुखिया ने उनका स्वागत किया, उन्हें स्वादिष्ट भोजन खिलाया और फिर अपने मन की बात कही। “मैंने सुना है कि ज़ूनगन्कि तुमने हाल ही में एक महान प्रज्ञान की बात कही थी। परन्तु तुमने जो कहा वह मुझे बहुत रहस्यमयी लगा। ‘सरोवर में स्नान करो और उस सुगन्ध को खोजो जो कभी फ़ीकी नहीं पड़ती।” इसका क्या अर्थ हुआ?”

ज़ून्गन् मुखिया की ओर देखकर मुस्कराया और उसने कहा : "जल का सरोवर है, प्रेम और प्रेम ही वह सुगन्ध है जो कभी फीकी नहीं पड़ती। मैं अपने छोटे भाई को समझा रहा था कि वह दुखी न हो, चाहे यह समय उसके संसार छोड़ने का ही क्यों न हो। हमने नोकोमिस् के साथ कितना सुन्दर जीवन बिताया है। उन्होंने हमें बताया है कि प्रेम क्या है। मैं चाहता था कि ओश्कि यह समझे कि यह शरीर भले ही नष्ट हो जाए, परन्तु यह प्रेम जिसे हम जान पाए हैं — यह प्रेम जो हमारे आस-पास है और हमारे अन्दर है, जो हमारा अपना सत्त्व है और सभी चीज़ों से हमें जोड़ता है — नष्ट नहीं किया जा सकता।"

मुखिया कुछ क्षण के लिए मौन हो गया, और फिर उसने सराहना करने के लिए — एक बार, दो बार, तीन बार — अपना सिर हिलाया।

"तुम सचमुच ज्ञानी हो, ज़ून्गन्," उसने कहा। "और मैं यह सोचे बिना नहीं रह पा रहा हूँ कि तुम्हारे जैसा उपदेशक गाँव के मामलों के लिए अनमोल है। क्या तुम मेरे और मेरे परिवार के साथ मेरे घर में रहोगे। वस्तुतः, आप सभी को हमारे साथ रहना चाहिए — यदि तुम्हारा भाई और नोकोमिस् भी हमारे साथ रहेंगे तो यह मेरे लिए बड़े सम्मान की बात होगी।"

और ऐसा ही हुआ। दोनों सूअरों और वह दयालू बूढ़ी महिला ने, जो उन सूअरों को अपने साथ ले आई थी, अपना शेष जीवन मुखिया और उसके परिवार के साथ बिताया। वे सुख-सुविधापूर्वक वहाँ रहे और उनके जीवन का उद्देश्य था — उनकी दयालुता और प्रज्ञान, उनकी विनम्रता और ईमानदारी, और जो भी उनसे मिलते, उन सबके लिए एक आदर्श और प्रेरणा बनना।

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

यह कहानी एक जातक कथा से प्रेरित है, जो भगवान बुद्ध के विभिन्न अवतारों के विषय में पौराणिक कथाओं और प्रसंगों का एक संकलन है।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।